SSN-2231-3885 SAMVED

संवेद-123

वर्ष-13, अंक-03, मार्च 2021

सम्पादक : **किशन कालजयी**

इस अंक में सम्पादकीय सहयोग
प्रकाश देवकुलिश
रत्नेश कुमार सिन्हा
आशा शर्मा
नीरू अग्रवाल

प्रबन्ध सम्पादक : **अतुल माहेश्वरी**

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
मो. : +918340436365
samvedmonthly@gmail.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

एकमात्र वितरक
नयी किताब प्रकाशन
1/11829, प्रथम मंजिल, पंचशील गार्ड़न,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22825606, 9811388579
nayeekitab@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा
बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089
से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,
शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : दो सौ रुपये
वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये
रजिस्टर्ड डाक से-एक हजार रुपये
आजीवन : दस हजार रुपये

सम्पादन : अवैतनिक

लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।

संजय राय

कल्पना की दृष्टि सम्मत उड़ान
(अक्ल और भैंस)

'अक्ल और भैंस' फणीश्वरनाथ रेणु की कम चर्चित कहानियों में से है। यह उनके तीसरे कहानी-संग्रह 'अगिन खोर' में संकलित है, जिसका प्रकाशन 1973 में हुआ था। यह कहानी पहली बार 'ज्योत्सना' में सितम्बर 1970 में छपी थी। यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि रेणु अपने समय से कटे हुए रचनाकार नहीं हैं। यह हरित क्रान्ति, जिसे वे 'हरी क्रान्ति' कहते हैं, को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कहानी है। हरित क्रान्ति स्वतन्त्र भारत के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। इस क्रान्ति ने कृषि का स्वरूप बदलकर रख दिया। यह दरअसल भारत के मानव संसाधन के पूर्ण इस्तेमाल के बजाय यन्त्रों पर निर्भरता बढ़ाने की प्रवृत्ति का ही कृषि के क्षेत्र में क्रियान्वयन था। एचवाईवी बीज, रासायनिक खाद और कीटनाशकों के इस्तेमाल से तथा यान्त्रिक ढंग से की गयी खेती के तात्कालिक लाभ तो हुए पर बाद के अध्ययनों में यह साफ हो गया कि एचवाईवी बीज, रासायनिक खाद और कीटनाशकों पर सिर्फ निर्भरता ही नहीं बढ़ी है बल्कि इसने मिट्टी से उसकी उर्वरता ही छीन ली, भूमिगत जल को दूषित और नष्ट कर दिया। यानि पर्यावरण पर घातक प्रभाव पड़ा। वन्दना शिवा जैसे वैज्ञानिकों और तमाम पर्यावरणविदों ने यह सिद्ध कर दिया कि हरित क्रान्ति को ज़मीन पर उतारना दरअसल आत्मघाती कदम था। जिन इलाकों में खेती की यह नयी पद्धत्ति लागू हुई वहाँ की स्थिति इस बात का प्रमाण है। बहरहाल फणीश्वरनाथ रेणु अपने समय पर चौकन्नी नजर रखने वाले रचनाकार थे, तभी तो हरित क्रान्ति जैसी घटना भी उनकी कहानी का हिस्सा बनती है।

फणीश्वरनाथ रेणु मूलतः ग्रामीण जीवन के कथाकार हैं। उनकी कथाओं का ताना-बाना गाँव के केन्द्र पर ही बुना होता है। 'अक्ल और भैंस' कहानी शहर से गाँव में आती है और गाँव में अपना विकास और विस्तार करती है फिर शहर की ओर बढ़ जाती है। रेणु ने इस कहानी को इसी संरचना में गढ़ा है। अगमलाल 'अगम' इसका मुख्य पात्र है। इसी पात्र के सूत्र से यह कहानी शहर से गाँव में आती है और गाँव में एक खास समय बिताकर फिर शहर की ओर रवाना हो जाती है।

इस कहानी में तनाव के कुछ बिन्दु हैं। मसलन शहर बनाम गाँव, किताबी अथवा पोथी